ये अव्यक्त इशारे

सत्यता और सभ्यता रूपी कल्चर को अपनाओ

18-03-2025

सम्पूर्ण सत्यता भी पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। सिर्फ काम विकार अपवित्रता नहीं है, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम-निशान न हो तब परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बन सकेंगे।

Adopt the culture of truth and good manners

Complete truth is based on purity. If there is no purity, there cannot be constant truth. Impurity is not just the vice of lust, for it also has companions. So, to be greatly pure means that there should be no name or trace of impurity for only then can you become an instrument for God's revelation.